M.A. Semester - I
Philosophy CC - 03

Prof. Ragini Kumari
Prof. & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

Theory of Knowledge of Plato

(Part - II)

अस्तु Plato "Knowledge is Perception" का खण्डन करने के बाद "Knowledge is opinion" का खण्डन करता है। उसकी दृष्टि से गलत opinion तो ज्ञान है ही नहीं, रही बात सही opinion की तो वे भी ज्ञान नहीं कहे जा सकते क्योंकि यह प्रायः विश्वासों पर आधारित होते हैं और विश्वास पर आधारित ज्ञान सत्य नहीं हो सकता। यदि हम विश्वासपूर्ण ढंग से अपना opinion रखते हैं और वह सही हो जाता है तो इस आधार पर कदापि यह नहीं कहा जा सकता है कि यह ज्ञान है, क्योंकि इसे मात्र सही opinion कहा जा सकता है।

फिर Plato के अनुसार ज्ञान के लिए यह भी जरूरी होता है कि यह जाना जाय कि कोई वस्तु है तो वह क्यों है?

"According to Plato to posses knowledge one must not only know that a thing is so, but why it is so." (W.T. Stace, Page 181)

इस प्रकार उक्त सिद्धान्तों को खण्डित कर Plato अपने ज्ञानमीमांसा के भावात्मक पक्ष पर आता है जहाँ वह बिना किसी विकल्प के सुकरात के इस विचार को ग्रहण करता है कि सभी ज्ञान जो concept के द्वारा प्राप्त होते हैं, वे ज्ञान हैं। Plato ने अपनी ज्ञानमीमांसा में concept के लिए 'Ideas' शब्द

का प्रयोग किया है, जो 'concept' का ही पर्यायवाची है। उसके अनुसार Ideas ही ज्ञान के वास्तविक विषय है। Plato के पूर्व सुकरात इस बात की व्याख्या नहीं कर पाये थे कि concept की संगत सत्ता है या नहीं। किन्तु Plato ने, उनकी इस कमजोरी को दूर किया और बतलाया कि Ideas की मनस से स्वतन्त्र निजी सत्ता है। उनके अनुसार ज्ञान और ज्ञान के विषय दोनों को नित्य अपरिणामी और सत् होना जरूरी है। अतः उनके अनुसार जब तक ज्ञान का विषय नित्य अपरिणामी और सत् नहीं होगा तब तक उसका सत्य ज्ञान नहीं हो सकता। चूँकि Ideas नित्य और अपरिणामी है अतः वे ही ज्ञान के वास्तविक विषय हैं।

Plato की मान्यता है कि सत्य ज्ञान की प्राप्ति सत्य प्रेम (Love of Eros) की भावना से होती है और यह 'सत्य प्रेम' द्वन्द्व न्याय को जन्म देता है जिसमें विभिन्न बिखरे हुए विशेषों को Idea में निहित करने तथा Idea को उपजातियों में बाँटने की पद्धति सामान्यीकरण और वर्गीकरण होती है।

अस्तु Plato के अनुसार ज्ञान प्रत्यय के माध्यम से ही होता है, ये ही ज्ञान के वास्तविक विषय हैं, किन्तु ये अनुभव से प्राप्त नहीं होते, बल्कि प्रागनुभविक हैं। उनके अनुसार ये प्रत्यय Ideas अव्यक्त रूप में आत्मा में रहते हैं और ज्ञान के लिए इनका और वस्तु में संवाद होना जरूरी है। इनकी मान्यता है कि यद्यपि की अपनी ससीमता के कारण अनुभव जगत की वस्तुओं को निरपेक्ष रूप से नहीं जान सकते — फिर भी किन्हीं मापदण्डों के आधार पर इनका मूल्यांकन करते हैं और यही मापदण्ड Plato के अनुसार Ideas ही हैं। अतः Plato की उक्ति है कि Ideal ज्ञान ही वास्तविक है — "Ideal Knowledge is the real Knowledge". Plato के अनुसार अनुभव-जगत में अनित्यता और सन्देह का साम्राज्य

है, किन्तु यह अनुभव जगत तक ही सीमित है,
चूँकि Ideas नित्य और असंदिग्ध है, इसलिए
हमारे ज्ञान में जो अनिवार्यता और सार्वभौमिकता आती
है वह अनुभव जगत से नहीं आकर Ideal जगत
से आती हैं। अनुभव जगत से तो Ideas के मात्र
संस्मरण होते हैं। Plato के इन विचारों का बहुत अधिक
प्रभाव Kant पर पड़ा है, क्योंकि Kant ने स्वीकार
किया कि बौद्धिक a-priori प्रत्ययों से ही ज्ञान में
सार्वभौमिकता और अनिवार्यता आती है, अनुभव जगत
तो मात्र ज्ञान की कच्ची सामग्री ही प्रस्तुत करता है।
Plato ने स्वीकार किया कि अनुभव जगत से हमें
मात्र नित्य संवेदन प्राप्त होते हैं जो हमारे ज्ञान के
विषय कदापि नहीं बन सकते, Idea ही ज्ञान का
विषय बन सकता है। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं
कि अनुभव जगत अनावश्यक है, बल्कि ज्ञात है
कि Plato के अनुसार अनुभव जगत से ही Ideas
का संस्मरण होता है, इसलिए इसका भी ज्ञान में
महत्व है।

- To be continued -